Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 09, (फरवरी, 2025)
पृष्ठ संख्या 36–37

कपास के रोग एवं उनका प्रबंधन

गरिमा, शुभम चांडक एवं विष्णु कुमार
केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान,
क्षेत्रीय स्टेशन, सिरसा, भारत।

Email Id: – garima.ahuja007@gmail.com

1. पत्ता मरोड़ रोग

रोग के लक्षण: रोग के लक्षण पौधे और शाखाओं के ऊपर नई पत्तियों पर दिखाई देते हैं। प्रारंभिक लक्षण छोटी और बड़ी शिराओं के मोटे होने और काले पड़ने के रूप में प्रकट होते हैं जिन्हें पत्तियों के नीचे से देखा जा सकता है। यह बीमारी सफेद मक्खी से फैलती है जो एक वाहक है और लक्षण अंकुर अवस्था में (बुवाई के लगभग 30 दिन बाद) और उसके बाद किसी भी अवस्था में दिखाई दे सकते हैं। सूर्य के प्रकाश के विपरीत देखने पर प्रभावित कपास के पौधों में नसों के मोटे होने और काले होने के विशेष लक्षण दिखाई देते हैं, जिन्हें छोटी शिरा मोटा होना प्रकार कहा जाता है, जिसके बाद ऊपरध्नीचे की ओर स्पष्ट रूप से मुड़ाव होता है। कुछ पत्तियों में द्वितीयक पत्ती जैसी संरचनाएं विकसित होती हैं जिन्हें एनेशन कहा जाता है। रोगग्रस्त पौधे बौने रह जाते हैं और पौधों की आंतरिक लंबाई कम हो जाती है।

रोग का प्रबंधन

- सैलिसिलिक एसिड (200 पीपीएम) या बटर मिल्क 5% या गोमूत्र . कैल्शियम नाइट्रेट (6.6%, 0.5%) या सरसों के तेल का 3–5 पत्ते पर स्प्रे (3.0%) बुआई के 30 दिन बाद से शुरू होने वाले पाक्षिक अंतराल पर करें।
- निम्बेसिडीन 300 पीपीएम का 1 लीटर/एकड़ की दर से 1–2 पत्ते पर छिड़काव करें।, इसके बाद वयस्कों के लिए डायफेन्थियाओरोन (200 ग्राम/एकड़) /बुप्रोफेजिन (320 मिली/एकड़) और स्पाइरोमेसिफेन(200मिली/एकड़)/पाइरीप्रो क्सीफेन (400–500 मिली) /एकड़) से छिड़काव करें। ।

2. जड़ गलन रोग

रोग के लक्षण: प्रारंभ में, तने के निचले हिस्से पर एक पीला धब्बा दिखाई देता है जो बाद में काला हो जाता है जिससे अंकुर सूख जाते हैं। प्रभावित अंकुर और पौधों में पत्ते मुरझाने के लक्षण दिखाई देते हैं और द्वितीयक जड़ों के सड़ने के कारण इन्हें आसानी से जमीन से बाहर निकाला जा सकता है। पौधे की पत्तियाँ शाखाओंध्तने से जुड़ी रहती हैं। सबसे विशिष्ट लक्षण निचले तने का सूखा या गीला गहरा सड़न है, जिसके बाद छाल कट जाती है और पौधों का अचानक मुरझा जाती हैं। जड़ गलन रोगजनकों के कारण होने वाला रोग प्रभावित क्षेत्र में गोलाकार पैच में होता है। यह रोग लगभग सभी कपास उगाने वाले क्षेत्रों में अमेरिकी कपास और देसी कपास दोनों प्रजातियों को प्रभावित करता है, जो देसी कपास में अधिक गंभीर है।

रोग का प्रबंधन

- बुआई से पहले थिरम 37.5 . कार्बोक्सिन 37.5% डीएस / 3.5 ग्राम/किग्रा बीज या ट्राइकोडर्मा हार्जियानम / 4 ग्राम/किग्रा या स्यूडोमोनास फ्लोरेसेंस / 10 ग्राम/किग्रा बीज से बीजोपचार करें।
- ट्राइकोडर्मा या स्यूडोमोनास का मृदा अनुप्रयोग रोग प्रबंधन के लिए 250 किलोग्राम अच्छी तरह खाद में 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से मिलाना अच्छा है।

- मिट्टी के तापमान को कम करने के लिए ज्वार या मोठ के साथ अंतरफसल अपनाएं।

3. उखेड़ा/विल्ट रोग

रोग के लक्षण: फ्यूसेरियम विल्ट केवल देसी कपास में होता है और यह कवक रोगजनक फ्यूसेरियम ऑक्सीस्पोरम के कारण होता है जो बीज और मिट्टी दोनों में पैदा होता है। रोग के लक्षण जड़ों पर दिखाई देते हैं जिससे पौधे की पत्तियां ऊपर से नीचे तक मुरझा जाती हैं। यह किसी भी फसल के विकास चरण में दिखाई देता है लेकिन आम तौर पर बुआई के 30 से 120 दिनों के बीच दिखाई देता है।

रोग का प्रबंधन

- बैसिलस सबटिलिस (10 ग्राम/किग्रा) या ट्राइकोडर्मा एस्पेरेलम 4 ग्राम/किग्रा की दर से बीज उपचार करें।
- ट्राइकोडर्मा एस्पेरेलम 1 किग्रा/एकड़ की दर से बुआई के दौरान मिट्टी में दो बार और 90 दिन बाद डालें। आवेदन से 15 दिन पहले 100 किलोग्राम फार्म यार्ड खाद में 1 किलोग्राम मिलाएं।
- कार्बेन्डाजिम 50%WP /1 ग्राम/लीटर पानी से छिड़काव करें।

4. मायरोथेसियम पत्ती धब्बा

रोग के लक्षण: मायरोथेसियम रोग में हल्के भूरे से हल्के राख के रंग के छोटे, गोलाकार से अंडाकार आकार के 2–10 मिमी के धब्बे बनते हैं, जिनका किनारा गहरे भूरेध्बैंगनी से लेकर लाल–भूरे रंग का होता है। गंभीर मामलों में धब्बे आपस में मिलकर बड़े पैच बनाते हैं। बाद में बड़े धब्बों पर शॉट होल दिखाई दे सकता है और संक्रमित पत्तियाँ गिर सकती हैं।

रोग का प्रबंधन

- संक्रमित पौधे के अवशेषों को हटा कर नष्ट कर दें।
- रोग की सूचना पर मैंकोजेब या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2 किग्रा/हेक्टेयर का छिड़काव करें।
- 15 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव किये जा सकते हैं।

5. पैराविल्ट

रोग के लक्षण: शीर्ष पत्तियों की समय से पहले मृत्यु, इसके बाद पौधा गिर सकता है। भारी वर्षा या मिट्टी संतृप्त होने के कुछ घंटों के भीतर, पत्तियों का मुरझाना देखा जा सकता है। यदि धूप तेज और गर्म है, तो पत्तियाँ तुरंत सूख सकती हैं, मुरझाए हुए पौधे सभी पत्तियाँ गिरा देते हैं और केवल छोटे अपरिपक्व फल रह जाते हैं। बादल वाले मौसम में, पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं और बिना मुरझाए या कम मुरझाकर मर जाती हैं।

रोग का प्रबंधन

- फसल में जल जमाव न होने दें।
- प्रभावित पौधों पर मुरझाने के लक्षण दिखाई देने के तुरंत बाद कोबाल्ट क्लोराइड / 10 पीपीएम या सोडियम बेंजोएट / 50 पीपीएम का पत्ते पर छिड़काव और/या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 25 ग्राम 200 ग्राम यूरिया/10 एल का छिड़काव करें।

6. टिंडा गलन

रोग के लक्षण: प्रारंभ में यह रोग छोटे भूरे या काले धब्बों के रूप में प्रकट होता है जो बाद में बड़ा होकर पूरे बीजकोषों को ढक लेता है। संक्रमण भीतरी ऊतकों तक फैल जाता है और बीज तथा लिंट सड़ने लगते हैं। टिंडा फूटकर नहीं गिरते और समय से पहले नहीं गिरते। कुछ मामलों में, सड़न बाहरी हो सकती है, जिससे पेरिकार्प सड़ जाता है और आंतरिक ऊतक मुक्त हो जाते हैं। प्रभावित बीजकोषों पर, कवक की प्रकृति के आधार पर बड़ी संख्या में कवक के फलने वाले पिंड देखे जाते हैं।

रोग का प्रबंधन:

- कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50%WP /2.5 ग्राम या कॉपर सल्फेट 47.15% मैनकोजेब 30% WDG/5 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करें।
- इष्टतम अंतर अपनाएं।
- उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा का प्रयोग करें।